सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान-मैं बाप समान विश्व कल्याणकारी मास्टर दु:खहर्ता सुखकर्ता हूँ।

शिवभगवानुवाच - अब चारों ओर दु:ख अशांति बढ़ रही है इसलिए अपने विश्व कल्याणकारी स्वरूप को प्रत्यक्ष करो। विश्व कल्याण में स्व-कल्याण स्वत: और सहज हो जायेगा क्योंकि अगर मन फ्री है तो व्यर्थ आता है लेकिन मन बिजी होगा तो व्यर्थ सहज ही समाप्त हो जायेगा। इसलिए आप सब विश्व कल्याणकारी दु:खहर्ता-सुखकर्ता बनो।

योगाभ्यास - मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ - जब हम इस स्वमान में स्थित रहते हैं तो सारे विश्व को हमसे स्वत: ही श्रेष्ठ वायब्रेशन्स मिलते रहते हैं। तो हम सारे दिन इस स्वमान की सीट पर सेट रहें।

- विश्व की मंसा सेवा के लिए हम सारे दिन में कोई विशेष समय निश्चित करें। कम से कम दो बार तो अवश्य ही विश्व को सकाश दें। साथ ही हर ट्रैफिक कंट्रोल में भी मंसा सेवा करें। मंसा सेवा में विशेष अपने फरिश्ते स्वरूप द्वारा सारे विश्व की आत्माओं को सुख, शांति, आनंद व पवित्रता की किरणें प्रदान करें अथवा विश्व के ग्लोब को अपने हाथ में लेकर सभी देश की आत्माओं को सकाश दें।

धारणा - रहमदिल

- बापदादा समय प्रति समय सूचना देते रहे हैं कि समय अनुसार आप लोगों का एक-एक का स्वमान है विश्व कल्याणकारी। चारों ओर दु:ख अशांति बढ़ रही है, आपके भाई, आपकी बहिनें परिवार दु:खी हो रहे हैं तो आपको अपने परिवार पर रहम नहीं आता? - **शिवभगवानुवाच**

स्वचिंतन - क्या मैं अपने वर्तमान पुरुषार्थ से संतुष्ट हूँ?

- अपने पुरुषार्थ में और तीव्रता लाने के लिए क्या करूं?

- एक तीव्र पुरुषार्थी आत्मा का शब्दचित्र बनाएं।

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! पिछले सीजन की एक मुरली में बाबा ने कहा था कि - ''अभी संगमयुग में जो चाहे, जितना चाहे उतना बाप से सहयोग मिल सकता है।'' भगवान हमें खुला ऑफर दे रहे हैं कि मैं तुम्हारे लिए खाली बैठा हूँ तुम जितना चाहो मुझसे ले लो। सचमुच यह भाग्य बनाने की वेला है, भाग्यविधाता से जितना चाहें, उतनी लम्बी लाईन अपने भाग्य की खिंचवा लें। अपने पुरुषार्थ को भी उसके सहयोग से सहज, सरल और तीव्र कर लें। और क्या-क्या सहयोग ले लें उस सर्वशक्तिवान से, इस पर सभी तीव्र पुरुषार्थी अवश्य विचार करें..!!

दूसरा सप्ताह

सर्व सम्बन्धों से परमात्मा की याद में एकाग्र हो जाएं........

चलें हम उसके प्यार में मग्न हो जायें, जिसने हमारा जीवन इतना ऊंच, श्रेष्ठ, पवित्र बना दिया... चलें हम उसकी याद में मग्न हो जायें जिसने हमें सर्व सम्बन्धों का प्यार दिया... चलें हम उस शिव पिता की याद में खो जायें जिसने हमें सर्व खजानों से भरपूर किया है... हमारे पर अनगिनत उपकार किए हैं... हमारे सब दु:ख हर लिए हैं... अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करवाकर हमारे जीवन को अलौकिक बना दिया है... चलें हम उसकी याद में खो जाएं जिसने हमें स्वराज्य अधिकारी, बेफिक्र बादशाह बनाकर अनेक फिखरों से फारिग कर दिया... चलें हम उसको दिल से याद करें जिसने हमारा जीवन पवित्र बना दिया.... चलें हम उनकी याद में मग्न हो जायें जो हमें स्वर्ग की बादशाही देने हमारे सन्मुख आया है... चलें हम उस परम सतगुरु का ध्यान करें जिसने हमें मुक्ति जीवनमुक्ति की सच्ची राह दिखाई... चलें हम उस शिव साजन के प्यार में खो जायें जिसने स्वयं हमें अपनी सजनी बनाया... चलें हम उस खुदा दोस्त की याद में समा जाएं जो हमें पग-पग पर मदद करने के लिए बंध गया है... हम उसके प्यार में इतना खो जायें कि हर श्वांस, हर सेकेण्ड उसकी याद के बिना बीते ही नहीं... यह कितनी सुखद याद है जो हमें देह और देह की दुनिया से दूर, बहुत दूर अपने स्वीट होम तक ले जाती है... अहा मेरे मीठे बाबा आपने मेरा जीवन कितना ऊंच व श्रेष्ठ बना दिया... चलें हम उस प्रियतम के साथ कम्बाइंड हो जाएं जो हमें अनेक जन्मों के लिए सर्वगुण संपन्न सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बना देता है... अपनी सर्वशक्तियों से हमें फुलचार्ज कर देते हैं... चलें हम उसका निश्छल, निर्मल व नि:स्वार्थ प्यार में खो जायें... भृकुटि सिहांसन पर विराजमान मैं चमकता हुआ स्टार स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ... मैं पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मा हूँ... मैं आत्मा अब इस साकार लोक से अपने स्वीट साइलेंस धर जा रही हूँ... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा परमधाम में सर्वशक्तिवान, ऑलमाइटी अथॉरिटी के सनमुख हूँ... बाबा से सर्वशक्तियों की किरणें मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं... मैं आत्मा स्वयं को भरपूर अनुभव कर रही हूँ... मुझ आत्मा से वह किरणें चारों ओर दूर-दूर तक फैल रही हैं... इन शक्तिशाली किरणों की सकाश सर्व आत्माओं को प्राप्त हो रही है... उनके दु:ख कष्ट सब नष्ट हो रहे हैं... उनका भी कल्याण हो रहा है... उनके जीवन में सुख शांति की बौछार हो रही है... वे भी स्वयं को धन्य-धन्य अनुभव कर रहे हैं...।

श्रीमद्भगवद्गीता...

पृष्ठ 8 का शेष

क्या ब्रह्मा के तन रूपी रथ में आकर भगवान शिव ने युद्ध कराया था? - कृष्ण, अर्जुन, रथ आदि को समझने के बाद, युद्ध के बारे में भी कुछ चर्चा करना आवश्यक है। विचार करने की बात है कि क्या निर्विकारी, शांति स्वरूप, प्रेमस्वरूप, पतित-पावन, परमात्मा ने अर्जुन अथवा ब्रह्मा को हिंसा-युक्त किसी युद्ध के लिए आज्ञा, परामर्श या स्वीकृति दी होगी? जबकि महात्मा लोग भी मनुष्यों को अहिंसा के पालन की शिक्षा देते, लड़ाई-झगड़े को छोड़ने का उपदेश करते और शांति करने का ईश्वरीय संदेश देते हैं, हरेक पिता भी अपने पुत्र को परस्पर भाई-चारे से और प्रेम से रहने की शिक्षा देता है तो क्या सर्व महात्माओं से महान, परमपिता परमात्मा ने पाण्डवों को कौरवों से लड़ने की आज्ञा दी होगी? भगवान तो धर्म की स्थापना के लिए अवतरित हुए थे और धर्म का तो परम लक्षण अहिंसा है, तब क्या हिंसा का पाठ उन्होंने पढ़ाया होगा? धर्म के जो दस लक्षण बताये गए हैं उनमें

ज्ञानसरोवर। ब्र.कु.रमेश शाह को सम्मानित करते हुए डी.आर.डी.ओ. के भुजंग राव।

आलेफाटा। मेमोरी मैनेजमेंट कार्यक्रम के अंतर्गत 'सरस्वती पूजन' करते हुए कॉलेज के प्रिंसीपल, ब्र.कु.स्वामीनाथन, ब्र.कु.सुनिता बहन तथा अन्य।

वड़ौदा। प्रसिद्ध कथाकार केदारनाथ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राज बहन।

फैजपूर। सी.डी. का विमोचन करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.शकुंतला बहन, ब्र.कु.मीरा बहन तथा सर्व संत।

असाम। असाम युनिवर्सिटी में शाश्वत् यौगिक खेती पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.राजु ब्र.कु.सरला तथा अधिकारी।

बाबैन, लाडवा। सरपंच सुखदेव सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.ज्योति बहन एवं ब्र.कु.सरोज बहन।

रांची। दैनिक भास्कर के संपादक राधेन्द्र को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.निर्मला।

सुरत । ट्राफिक पुलिस के अधिकारियों को 'मोटिवेशन सेमिनार में अपना चिचार व्यक्त करते हुए ब्र. कु. सुनिता ।